ISSN: 2347-2723 Impact Factor : 2.0260(UIF) Volume - 4 | Issue - 1 | August - 2016

Review of Literature

व्यवहारवादी भूगोल का ऐतिहासिक विकास – एक विश्लेषणात्मक विवरण

Dr. Satyabir Yadav, H.E.S.-1
Associate Professor of Geography & Incharge Government College for Woman, Pali (Rewari)

प्रस्तावना–

1966 के दशक के मध्य तक क्रान्ति के परिणामों के बारे में यह बात अनुभव की जाने लगी थी कि मानव भूगोल के क्षेत्र में सांख्यिकीय आधार पर किया जाने वाला भौगोलिक अध्ययन अधिकतर जीवन की वास्तविकता पर आधारित नहीं था। गणितीय या सांख्यिकीय आधार पर किये जाने वाले अध्ययन में मानवीय भावनाओं एवं व्यवहार को कोई स्थान नहीं दिया गया था। फलस्वरूप मात्रात्मक भूगोल के प्रति व्यापक असंतोष उत्पन्न हुआ।

भूगोल में परिमाणात्मक क्रान्ति की एक आधारभूत मान्यता थी कि मनुष्य एक ''विवेकी आर्थिक मानव'' (Rational Economic Man) है। अर्थात उसके सभी निर्णय आर्थिक दृष्टि से विवेक पूर्ण होते हैं। लेकिन इस मान्यता के आधार पर मानवीय भूगोल में शोधकर्ताओं के शोध के परिणाामों की शुद्धता तथा मानवीय निर्णयों की आर्थिक विवेकशीलता का सम्बन्ध आदर्शों पर से विश्वास उठ गया। इस उभरते हुए असंतोष के कारण 1960 के दशक में भूगोल में व्यवहारवादी पद्धति को अधिक महत्व दिया जाने लगा। पर्यावरण और मानवीय व्यवहार में गहरा सम्बन्ध है। मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्रियाकलाप उसके प्राकृतिक पर्यावरण के साथ व्यवहार पर निर्भर करते हैं। यह व्यवहार समान भौगोलिक परिस्थितियों में समान तथा भिन्न भी हो सकता है। मानव के व्यवहार की प्राथमिकता देने वाले भूगोल की शाखा को व्यवहारवादी भूगोल (Behavioural Geography) कहते हैं।

कॉक्स तथा गोलेज (Cox and Golledge 1969) के अनुसार, ''भूगोल की वह शाखा जिसमें मानवीय व्यवहार का अध्ययन किया जाता है उसे व्यवहारवादी भूगोल कहते हैं।''

मानव और पर्यावरण में गहरा अर्न्तसम्बन्ध से पाया जाता है। मानव अपने पर्यावरण को प्रभावित करता है तथा उससे प्रभावित भी होता है। मानव एक सक्रिय प्राणी है और वह स्थानिक पर्यावरण के ज्ञान के अनुसार व्यवहार करता है। वह अपने कार्य व निर्णय अपने पर्यावरणीय व्यवहार के अनुसार निर्धारित करता है।

व्यवहारवादी भूगोल का ऐतिहासिक विकास (Historical Development of Behavioural Geography)

प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यवहारवादी दृष्टिकोण को इमेनुअल कांट के समय से ही अपनाया जा रहा है। फ्रांस के प्रसिद्व विद्वान रेक्लस ने बताया था कि मानव–पर्यावरण सम्बन्धों में मानव निष्क्रिय प्राणी नहीं है बल्कि अपनी क्रियाओं द्वारा पर्यावरण को प्रभावित करता है।

सन् 1945 में गिलबर्ट व्हाइट का Human Responses to Floods नामक शोध प्रबन्ध प्रकाशित हुआ जिसमें बाढ़ के प्रति मानवीय प्रतिक्रिया का अध्ययन किया गया है। उन्होंने यह बताया कि प्राकृतिक आपदाओं के प्रति मानवीय व्यवहार विभिन्न प्रकार का होता है। अमेरिकी विद्वान सावर (Saur) ने प्राकृतिक तथा सामाजिक, सांस्कृतिक पर्यावरण को परिवर्तित करने के लिए मानवीय क्रियाओं को महत्वपूर्ण माना है।

राइट (Wright) 1947 ने मानव पर्यावरण अन्तर्सम्बन्धों के स्पष्ट वर्णन के लिए एक विशेष पद्धति पर जोर दिया। किर्क (1952–63) ने व्यवहारवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए स्पष्ट किया कि समय तथा स्थान के संदर्भ में एक समान भौगोलिक पर्यावरण में रहने वाले विभिन्न सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों का व्यवहार भी भिन्न–भिन्न होता है। उदाहरणार्थ दक्षिण हरियाणा के महेन्द्रगढ़ जिले में वर्षा की मात्रा व नहर द्वारा सिंचाई की सुविधा बहुत कम है। यहां एक ही गांव में निवास कर रहे यादव, सैनी, जाट, गुर्जर समाज के लोग अपने वातावरण के अनुसार भिन्न–भिन्न प्रकार से व्यवहार करते हैं। एक यादव अपने खेत में पशुओं के चारे के साथ–साथ सरसों उगाना पसन्द करेगा, वहीं एक सैनी अपने खेत में शाक–सब्जी के साथ फूलों व फलों की खेती करना पसन्द करेगा तो एक जाट अपने खेत में गेंहू उगाना पसन्द करेगा। एक गुर्जर अपने खेत में चना उगाना पसन्द करेगा। एक सैनी के लिए चार एकड़ जमीन भी बड़ी जोत हो सकती है, जबकी एक यादव के लिए 15 एकड़ जमीन भी ट्रेक्टर का प्रयोग करने के कारण छोटी जोत हो सकती है। अतः एक ही भौगोलिक पर्यावरण में निवास करने वाले प्रत्येक किसान का व्यवहार एक दूसरे से भिन्न है।

1. बोल्डिंग (1956) का मानवीय व्यवहार मॉडल

भूगोल में प्रतिबिम्ब (Image) की संकल्पना केनथ बोल्डिंग (Kenneth Boulding 1956) ने विकसित की थी। उनके अनुसार मानव के अधिकांश निर्णय प्राकृतिक पर्यावरण की अपेक्षा व्यवहारवादी पर्यावरण पर आधारित होते हैं।

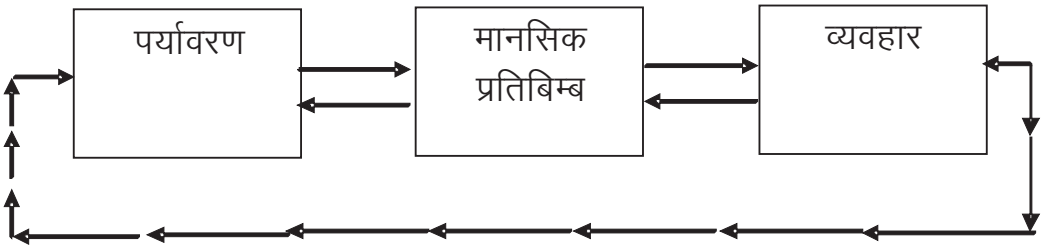

मानव पर्यावरण सम्बन्ध बोल्डिंग, (1956) के अनुसार

उपरोक्त मॉडल के अनुसार जो व्यक्ति जिस प्रकार के पर्यावरण के सम्पर्क में आते हैं वे लोग अपने आप पास की वस्तुओं का मानसिक प्रतिबिम्ब (Image) बना लेते हैं, जैसा मानसिक प्रतिबिम्ब बनता है वैसा ही लोग व्यवहार करने लगते हैं।

2. डाउन्स ;क्वूदेए 1970द्ध का मॉडल

इस मॉडल में पर्यावरणीय अवबोध (Environmental Perception) एवं व्यवहार (behaviour) को स्पष्ट करने वाले मॉडल के रूप में दर्शाया गया है। डाउन्स के अनुसार वास्तविक विश्व (पर्यावरण) से प्राप्त सूचनाएँ मानव के व्यक्तित्व, संस्कृति, सभ्यता, विश्वास तथा ज्ञान के आधार पर छनकर आती है।

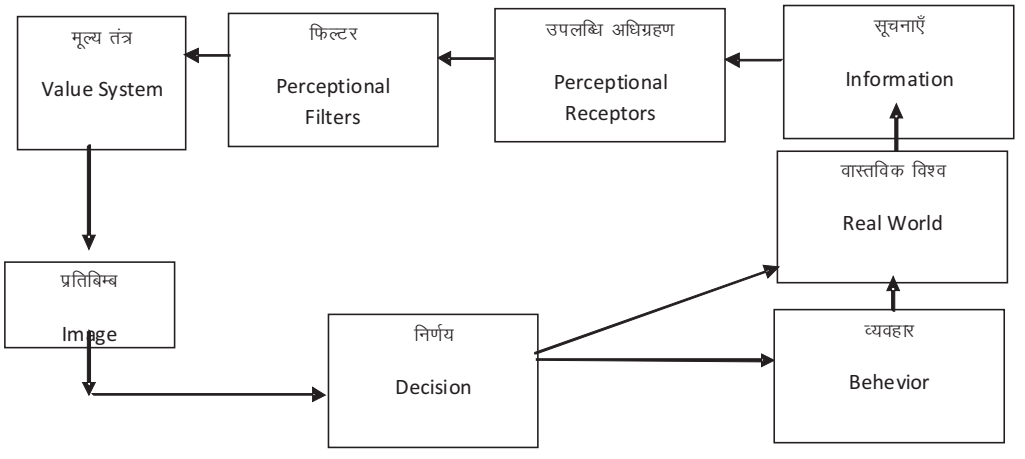

पर्यावरण एवं मानवीय व्यवहार (डाउन्स 1970)

उसके पश्चात मानव मस्तिष्क में प्रतिबिम्ब (Image) बनाता है। उसके आधार पर संसाधनों के अवशोषण (Exploination) हेतु निर्णय लेकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ती का विचार करता है और उसे व्यवहार में लाता है।

3. सोनेन फील्ड (1972) का आचरणपरक केन्द्रीय मॉडल

इस मॉडल के द्वारा सोनेन फील्ड ने बताया की मानवीय विचार को केन्द्रीय स्थान प्राप्त है। भौगोलिक वातावरण एक वृहद क्षेत्र है अतः मनुष्य अपनी समझ से ही उसे अनुग्रहित करता है पुनः आवश्यकतानुसार कार्यिक योजनाएँ बनाता है। चित्र नं. (18.3) इन योजनाओं के निर्धारण बाद भौगोलिक प्रक्रिया का निर्धारण होता है। यदि मानव भौगोलिक वातावरण का ठीक मूल्यांकन एवं अनुग्रहण नहीं करता है तो कार्यिक योजनाएँ भी गलत हो सकती हैं। अतः मॉडल को देखने से स्पष्ट है कि व्यवहारपरक वातावरण ही विकास कार्यों का आधार है। यदि मानव के व्यवहारिक वातावरण में वृद्धी होती है तो कार्यिक वातावरण में भी वृद्वी होगी यदि सीमित आचारपरक होगा तो कार्यिक वातावरण भी सीमित होगा।

अनेक देशों की जनजातियों का आचारपरक वातावरण सीमित होता है अतः वे अपना एकाकी जीवन बिताती है। फलस्वरूप, उनका कार्यिक वातावरण सीमित होने से निम्न जीवन स्तर पाया जाता है।

Volume - 4 | Issue - 1 | August - 2016

चित्र 18.3 : सोनेन फील्ड (1972) का व्यवहारपरक संकेन्द्रीय मॉडल

व्यवहारवादी भूगोल के विकास के लिए स्वीडिश विद्वान जुलेन वोल्पर्ट (Julain Wolpert) का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने अपने शोध पत्र ''स्थानिक संदर्भ में निर्णय का प्रक्रमण'' (The decision Process in Spatial Context) 1964 में प्रकाशित किया। इस शोधपत्र के मध्य स्वीडन में कृषि भूमि उपयोग में वास्तविक श्रम उत्पादन की तुलना अनुकूलतम (Optimum)उत्पादन से कि जो कि आर्थिक मानव की संकल्पना पर आधारित है अर्थात् आर्थिक मानव हमेशा अपने लाभ को अधिकतम करने का प्रयास करता है, उसने यह निष्कर्ष निकाला कि वहां के किसानों को कृषि उत्पादन से कोई लाभ नहीं हो रहा था। कृषि से वास्तविक उत्पादन अनुकूलतमक उत्पादन से 40: कम था फिर भी वंहा के किसान आर्थिक लाभ की अपेक्षा संतुष्ट थे।

वास्तव में वोल्पर्ट ने व्यवहारवादी संकल्पना में इष्टतम लाभ के स्थान पर मानवीय निर्णय को उच्च स्थान दिया है। उनके निर्माण का उद्देश्य अधिकतमक संतोष प्राप्त करना था अधिकतम लाभ प्राप्त करना नहीं।

सन् 1966 में पीटर गोल्ड ने मानसिक मानचित्र (Mental Map) बनाकर यह समझाया कि मानव के स्थानिक निर्णय उसके पर्यावरण की मानसिक प्रतिबिम्ब (Image) के आधार पर लिये जाते हैं। हम अपने आस–पास की वस्तुओं की जो मानसिक तस्वीर बनाते हैं वैसा ही व्यवहार करने की कोशिश करते हैं। इस प्रकार के मानसिक–मानचित्र स्थानिक विश्लेषण के साथ–साथ सामाजिक निवेश की योजना के निर्णय में सहायक होते हैं।

1970 के दशक के बाद विभिन्न व्यवहारिक अनुभवों का पूनर्मूल्यांकन हुआ। गोल्ड और व्हाइट (1974) द्वारा मैंटल मैप्स (Mental Maps) शीर्षक से एक पुस्तक प्रकाशित की गई जो काफी लोकप्रिय रही। इस विषय पर डाउन्स (1970, 1973) तथा सारिनन (1979) की कृतियों का प्रकाशन हुआ।

वर्तमान समय में व्यवहारिक भूगोल का प्रचार–प्रसार बढ़ रहा है। इसके पक्ष मे महत्वपूर्ण तर्क यह था कि व्यवहारिक विश्लेषण के माध्यम से नीति निर्धारण का आँकलन तथा क्षेत्रीय नियोजन संतोष जनक ढंग से किया जा सकता है।

गोल्ड (1980) के अनुसार व्यवहारवादी शोधकर्ता अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सके क्योंकि वे अपने अध्ययन में सामाजिक समस्या से निकट से जुड़े हुए नहीं थे, जबकि नीति निर्धारण और नियोजन शोधकार्य की आवश्यक शर्तें है। व्यवहारवादी भूगोल के विद्यार्थियों ने इस मूलभूत बात की ओर ध्यान नहीं दिया। फिर भी व्यवहारवादी भूगोल के अन्तर्गत हमें मानव के व्यवहार तथा मानव–पर्यावरण के अन्तर्सम्बन्धों को समझने तथा विश्लेषण करने में सुविधा रही है।

व्यवहारवादी भूगोल (Behavioural Gregraphy) की यह दार्शनिक विचारधारा मनोविज्ञान पर आधारित है। मनौवैज्ञानिकों का मत है कि मनुष्य अपने पर्यावरण में रहते हुए अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा पर्यावरणीय सूचनाएँ प्राप्त (Receive) करता है। ज्ञानेन्द्रियों द्वारा एकत्रित की गई ये प्राथमिक सूचनाएँ भिन्न–भिन्न व्यक्तियों में भिन्न–भिन्न होती हैं।

उदाहरण के लिए एक महासागर देखकर कुछ मनुष्यों में यह अनुभव होता है कि महासागर यातायात के प्राचीनतम एंव सस्ते साधन हैं। अन्य के लिए महासागर खनिज तेल व प्राकृतिक गैस के भण्डार हैं जो महाद्वीपीय मग्न तट पर पाये जाते हैं। कुछ के लिए महासागर जलवायु के मुख्य नियन्त्रक माने जाते हैं। अन्य के लिए महासागर का जल जीवों व वनस्पति में औषधी युक्त तत्व पाये जाने के कारण ये औषधियों के भण्डार हैं तो कुछ मनुष्यों के लिए महासागर समुद्री भोजन के रूप में मछलियों के सबसे बड़े स्त्रोत हैं। जबकी अन्य के लिए ये सोना, चांदी, रेडियम, क्लोराइड, खनिज तेल आदि अनेक खनजि पदार्थों के मुख्य भण्डार हैं।

अभिग्रहण की भिन्नताओं के कारण प्रत्येक मनुष्य के अनुभव भी भिन्न होते हैं। प्रत्येक मानव अपने दिमाग में जैसी बातें प्राप्त करता है। अपनी बौद्धिक क्षमता की विभिन्नता के कारण भिन्न–भिन्न प्रकार से अनुभव (Perceive) करता है। उदाहरण के लिए कुछ लोग जिन्हें कोयले के बारे में पूर्ण ज्ञान नहीं हैं वे अपनी क्षमता से कोयला युक्त चट्टान को काला पत्थर कहेंगे जबकी कुछ लोग जिन्हें इसके बारे में पूर्ण ज्ञान है वे अपनी बौद्विक क्षमता से उसे कोयला कहेंगें।

अनुभव के बाद मानव मस्तिष्क में संज्ञान (Cognition) उत्पन्न होता है। संज्ञान का अर्थ बौद्धिक स्तर तथा पूर्व ज्ञान से है। संज्ञान के बाद चित के आत्मज्ञान (Apperception) की अवस्था आती है। इस अवस्था में मनुष्य के मस्तिष्क में आत्मज्ञान की जानकारी होती है। वह अपने पर्यावरण से आत्मसात करता है तथा उसका अन्तर्ज्ञान जाग्रत होता है तत्पश्चात् मानव मस्तिष्क में ध्यान की अभिक्रिया होती है। वह आत्मज्ञान के आधार पर अपने पर्यावरण के बारे में ध्यान (Meditation) करता है। उसमें अनुकूलन करते हुए उससे लाभ प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। इस प्रक्रिया में वह पर्यावरणीय संसाधनों का आँकलन करता है और अपने सीमित ससांधनों द्वारा उन सीमित संसाधनों

का अनुकूलतम उपयोग करना चाहता है जिस कारण विचार उत्पन्न होते हैं।

उपरोक्त वर्णित अभिग्रहण, अनुभव, संज्ञान, आत्मज्ञान, ध्यान के बाद अन्तिम प्रक्रिया में वह इन विचारों को कार्यान्वित करने की कोशीश करता है। इस अवस्था को कार्यान्वयन (Implementation) की अवस्था के नाम से पुकारा जाता है।

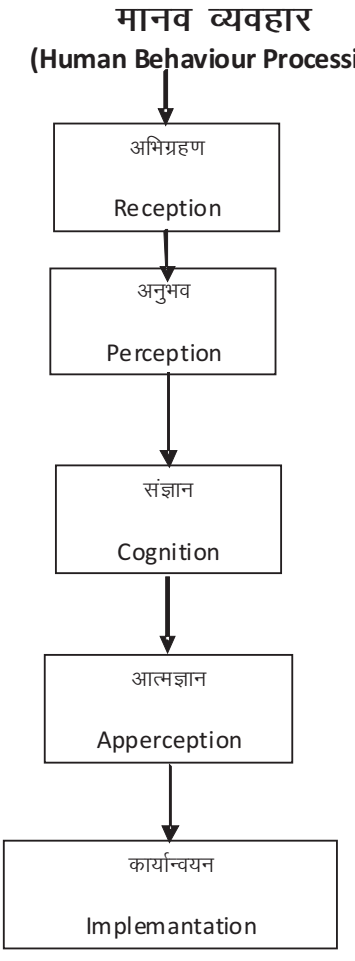

उपरोक्त चित्र से स्पष्ट है कि मानव का व्यवहार कोई आकस्मिक घटना नहीं होती बल्कि यह श्रृखंलाबद्ध रूप से उत्पन्न हुए विचारों से सम्बन्धित है। यह व्यवहार उसके निजी अनुभवों से प्रभावित होता है। जो प्रभावशाली अनुभव होते हैं उनको मनुष्य कार्यान्वित कर लेता है और अपने व्यवहार में शामिल कर लेता हैं। वे अनुभव जो कम प्रभावशाली हैं उनको मनुष्य कम कार्यान्वित करता है और व्यवहार में काम लाता है। तीसरे प्रकार के अनुभव किताबों, साथियों या पूर्वजों से प्राप्त करता है। जैसे – नहाना, खाना, पकाना, सब्जी बनाना, दूध, दही, घी का खाने में उपयोग आदि इन्हें निजी अनुभव नहीं कह सकते हैं।

व्यवहारवादी भूगोल (Behavioural Geography) के अध्ययन में निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान दिया जाता है।

1.भौगोलिक स्थिति (Geographical Location)
2.प्राकृतिक संसाधन (Natural Resources)
3.स्थानिक वितरण (Spatial Distribution)
4.स्थानिक अन्तक्रिया (Spatial Interaction)
5.मानव पारिस्थितिकी (Human Ecology)

व्यवहारवादी भूगोल के अध्ययन में सर्वप्रथम स्थानिक विश्लेषण होता है। दूसरी अवस्था में पारिस्थिकीय विश्लेषण और तीसरी अवस्था मे जटिल प्रादेशिक विश्लेषण किया जाता है। किसी विशिष्ट प्रदेश की रचना मे स्थानिक और पारिस्थितिकीय कारकों का बहुत बड़ा योगदान होता है।

स्थानिक व पारिस्थितिकीय कारक वहां के लोगों के रहन–सहन, खान–पान, सभ्यता, आर्थिक व सामाजिक प्रगति को प्रभावित करते हैं। इन सब कारकों से ही मानवीय व्यवहार प्रभावित हो जाता है।

व्यवहारवादी भूगोल के लाभ

1.भूगोल में व्यवहारात्मक पद्धति को लागू करने से मानव का व्यक्तिगत प्रभाव बढ़ा है।
2.यह भूगोल मानव एवं प्राकृतिक पर्यावरण के बीच अन्तर्सम्बन्ध स्थापित करने में सहायता प्रदान करता है।
3.इस भूगोल के विकसित होने से अन्य विषयों के साथ सम्पर्क स्थापित किया जाने लगा जिससे विचारों के आदान–प्रदान में सहायता मिली।
4.इस भूगोल के विकसित होने से मानवीय व्यवहार से सम्बन्धित भौगोलिक शोध को समाज में महत्वपूर्ण स्थान दिया जाने लगा।
5.इस भूगोल ने नई विचारधारा तथा नई विधियों को विकसित करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया।

व्यवहावादी भूगोल की कमियाँ

1.व्यवहारवादी भूगोल में विचारों का क्रमबद्ध संगठन नहीं है तथा न ही सैद्धान्तिक आधार है।
2.इसमें सिद्धान्त और व्यवहार के बीच सामंजस्य ठीक–ठीक नहीं बैठ पाता। व्यवहारवादी भूगोल के सिद्धान्तों और प्रतिरूपों के नियोजन में बहुत अधिक कमियां पाई जाती हैं। उदाहरणार्थ छात्रों के सैम्पल (Sample) पर किया गया एक छोटा सर्वेक्षण व्यापक और महत्वपूर्ण नीति निर्णयों के निर्माण का आधार नहीं बन सकता।
3.इसमें अनुभूति मूलक निष्कर्ष के संश्लेषण का अभाव है।
4.व्यवहारवादी भूगोल के अधिकांश आँकड़े प्रयोगशाला में पशुओं पर किये प्रयोगों पर आधारित हैं जिन्हें मानव व्यवहार पर लागू किया जाता है, जो सही नहीं है।
5.व्यवहारवादी भूगोल पर्यावरण की अहंकेन्द्रित व्याख्या है।

व्यवहारवादी भूगोल मानव को एक सम–मनोवैज्ञानिक रूप में देखता है तथा पर्यावरणीय व्यवहार को अविमिय (Non-dimensional) रूप में देखता है, अर्थात् पर्यावरणीय प्रभाव जो मानव के आर्थिक सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक विचारों को प्रभावित करते हैं उन्हें नजर अंदाज कर देता है।

उपरोक्त कमियों के होते हुए भी व्यवहारवादी भूगोल को व्यापक रूप में स्वीकार कर लिया गया है। इसे प्रत्यक्षवाद में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसमें मानव–पर्यावरण अन्तर्सम्बन्धों का विस्तार से अध्ययन किया जाता है तथा क्षेत्रीय प्रतिरूप की व्याख्या की जाती है। व्यवहारवादी भूगोल का उपयोग पर्यावरणीय नियोजन के लिए किया जा सकता है। गोलेज के अनुसार क्षेत्रीय व्यवहार को समझने के लिए व्यक्तिगत अभिरुचियों, आचरणों, चिन्तन मानसिक मानचित्रों आदि के अध्ययन में काफी प्रगति हुई है। अतः व्यवहारवादी भूगोल का काफी महत्व है तथा उसका भविष्य उज्ज्वल है।

REFERENCE :-

1.Downs, R.M and Meyer J.T. (1978) Geography and the mind. American behavioural scientist , Vol-22
2.Downs, R.M. and Stead (eds) 1973 : Image and environment, London, Edward Arnold.
3.Gould ,P.R. and White R (1974), Mental Maps Hammendsworth: Penguin Books.
4.Gold , J.R. (1980) An introduction to behavioural geography, oxford: oxford university press.
5.Richards, P (1974) Kant's geography and mental map: Transactions institute of british geography vol-61
6.Boulding, K (1956) General system theory; The skelton of science, management science. Ol-2
7.Mazid Hussain, Evolution of geographic thought Rawat Publication, Jaipur 1984.
8.Cox, K.R. and Golledge, R.G. (Eds.) (1969), Editorial Introduction: Behavioural Models in Geography, in Cox and Golledge (Eds.) Behavioural Problems in Geography: A symposium, Evanston: Northwestern University Studies in Geography, Vol.17.
9.Kirk, W.K. (1951), Historical geography and concept of behavioural environment, Indian Geographical Journal (Silver Jubilee Volume), col. 25.
10.James, P.E. (1972) All possible worlds: A History of Geographical Ideeas,Indianapolis: Odessey Press.